IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

श्री अरविन्द : हिन्दी भाषा और विकसित भारत

डॉ.अरुण कुमार अग्रहरी
सहायक प्राध्यापक {बीएड विभाग}
साईं बाबा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, भिलाईपुर,
पारू ,मुजफ्फरपुर बिहार
ईमेल-agrahari515@gmail.com

शोध –पत्र सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र विषय-वस्तु विश्लेषण पर आधारित है भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के उद्देश्य में श्री अरविन्द जी के दर्शन को आधार बनाते हुए उद्देश्य का निर्माण किया गया है ,भाषा किस तरह से प्रतिभा निर्माण में सहायक होती है और उच्चतम स्तर के नागरिको का निर्माण होने से भारत स्वंय ही किस तरह विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आ जाएगा यही समझने का प्रयास है।

मष्तिष्क का विकास इन्सान के परिवेश और शिक्षा से होता है एक बालक समान्य परिवेश में रहते हुए भी उच्च स्तर को प्राप्त करता है | बालक की पृष्ठिभूमि यह नहीं निर्धारित कर सकती है कि भविष्य वह क्या बनेगा |अवधारणा या मष्तिष्क धारणा ही उस बालक का भविष्य का निर्माता होता है | किसी राष्ट्र का निर्माण वहां के नागरिको से होता अगर वे नागरिक उच्च मष्तिष्क धारणा वाले होंगे तो उस राष्ट्र का विकास तीव्रगति से होगा |भारत के सन्दर्भ में देखा जाय तो भारत एक विकासशील राष्ट्र की श्रेणी में हैं |भारत के संसाधन भारत की जनसँख्या के हिसाब से बहुत अल्प है इसलिए भारत को बिकसित राष्ट्र की श्रेणी लाने के लिए उच्च मष्तिष्क धारणा वाले नागरिको का निर्माण हो तथा यह तब ही सम्भव है जब भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में बदलाव हो|

श्री अरविन्द का विचार है" कि "मष्तिष्क की धारणा का निर्माण मष्तिष्क के विचार स्तर ,चित्त ,मनस, बुद्धि तथा अंतर्ज्ञान से होता है जिनका क्रमशः विकास होता हैं""

एक राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए श्री अरविन्द जी के "समग्र जीवन द्रष्टि "को अपनाना होगा क्योंकि एक –एक नागरिक की उन्नति उच्च जीवन स्तर ही विकसित राष्ट्र के मायने हैं |भाषा के सन्दर्भ को देखा जाय तो भारत में अन्तराष्ट्रीय भाषा प्रचलन में है जो की राष्ट्र के नागरिक निर्माण में, उच्च बौद्धिक क्षमता निर्माण में पुर्णतः बाधक है | हमे अपनी हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त होने से उच्च अवधारणा का निर्माण होता है अन्यथा हमारी सारी शक्ति भाषा सिखने में लग जाती है और बालक मूल उद्देश्य से भटक जाता है इससे भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुचना मुशकिल होगा |

शब्द कुंजी : मष्तिष्क धारणा ,विकसित राष्ट्र ,समग्र जीवन ,संसाधन

प्रस्तावना –

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य **2047** के संदर्भ में श्रीअरविन्द के दर्शन ""उदात्त सत्य का ज्ञान" और "समग्र जीवन-दृष्टि"के आधार पर भारत को शीर्ष राष्ट्रों की श्रेणी में पहुंचाने के लिए यह किस तरह से प्रभावी होगा और कैसे लागू किया जा सकता है। भारत की जनसंख्या चीन के बराबर होने वाली है जबकि विकास में भारत, चीन से बहुत पीछे है। वहीं पर अमेरिका, रूस, इंग्लैंड की जनसंख्या भारत की अपेक्षा बहुत कम है और विकास बहुत अधिक है। श्री अरविंद का समग्र जीवन दृष्टि भारत की जनसंख्या पर पूर्णतः प्रभावी होना कठिन है क्योंकि संसाधनों की अत्यधिक कमी है। प्राचीन गुरुकुल शिक्षा अब प्रभावी नहीं हो सकती है। शैक्षिक अनुसंधान में अत्याधुनिक प्रयोगशाला, उपकरण और विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है जो कि भारत में बहुत कम है। इसलिए संसाधन की कमियां सीमित छात्रों को ही प्रवेश देती है जिससे कम प्रतिभा का निर्माण होता है। अगर भारत में निजी विश्वविद्यालय और संस्थानों की बात की जाए तो वह मात्र डिग्री बांटने वाले संस्थान है ना की अनुसंधान जैसे कठिन कार्यों पर निवेश करने वाले। आइआइटी, केंद्रीय विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय महत्त्व के संसाधनों पर यह कार्य पूर्णता करना होता है। शोध गुणवत्ता परिणाम, नई तकनीक का विकास विकसित रास्तों को विकसित होने का मुख्य बिन्दु है। इसी के बल पर पूरी दुनिया पर एकाधिकार कुछ राष्ट्रों का है। भारत में प्रतिभा की कमी नहीं है, लेकिन प्रतिभा निर्माण में बहुत ही समस्या है। जैसे भाषा की समस्या सभी छात्रों के लिए प्रभावी होती है। सभी सरकारी विद्यालय प्रदेश के बोर्ड द्वारा संचालित होते हैं तो वहाँ की भाषा प्रभावित होती है। जैसे उत्तर भारत, मध्य भारत में पूर्णता हिंदी भाषा है, लेकिन उन्हीं बच्चों को उच्च शिक्षा अंग्रेजी में प्राप्त करनी होती है। वे छात्र अंग्रेजी में सोच नहीं पाते हैं, इस कारण मस्तिष्क अवधारणा का विकास नहीं हो पाता और अंग्रेजी - हिंदी में उलझ जाते हैं। और असली उद्देश्य से भटककर किसी तरीके परीक्षा उत्तीर्ण करने को उद्देश्य बना लेते हैं। इस प्रकार भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भारत भाषा एवं उच्च शिक्षा में सुधार करना होगा।

उद्देश्य–

1. श्री अरविंद के शैक्षिक विचार से भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को समझना।
2. श्री अरविंद के दर्शन किस तरह से भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में ले जाने में सहयोग करेंगे?
3. भाषा प्रतिभा निर्माण में कैसे बाधक है को समझना।

विधि -प्रस्तुत शोध पत्र में विषयवस्तु विश्लेषण के विभिन्न पुस्तकों के आधार पर तथ्यों का लेखन किया गया है और निष्कर्ष निर्माण किया गया है।

श्री अरविंद की प्रमुख कृतियां–

- द लाइफडिवाइन
- द मदर
- एक्सेस ऑन द गीता
- लाइट्स ऑन योगा
- ऑन एजुकेशन
- ए सिस्टम ऑफ नैशनल एजुकेशन

श्री अरविन्द के अनुसारशिक्षा

श्री अरविन्द के अनुसार "शिक्षा का अर्थ वह है **जो बालक को कर्मठ नागरिक बनाये एवं समाज के आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ हों।** शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नहीं समझना चाहिए, बल्कि उसे मस्तिष्क की शक्ति एवं आत्मा का जीवन उत्कर्ष करना चाहिए।"

श्री अरविंद के उक्त कथन नागरिक निर्माण का आधार बिंदु है।एक बालक जब जन्म लेता है तो उसके परिवेश द्वारा उसका पालन पोषण होता है जो उसके अंदर एक संस्कार का निर्माण करता है। विद्यालय से बालक को सामाजिक जीवनएवं कर्तव्यबोध का एहसास होता है। शिक्षा के प्रारंभिक चरण में ही बालक के अंदर अपने कार्य की तत्परता एवं कार्य शुद्धता के प्रति सजगता दिखाई पड़ती है। शिक्षक बालक के अंदर इन सभी आदतो का निर्माण करता है, और बालक प्रारंभिक कक्षा से ही भविष्य के लक्ष्य को निर्मित करने का प्रयास करना शुरू कर देता है। किसी राष्ट्र के उच्चतम विकास की यही नीव होती है। बालक की सक्रियता एवं कार्य जागरूकता एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, परन्तु आगे चलकर बालक की मनोदशा और कार्य सक्रियता धीमी हो जाती है, जिसका कारण संसाधन की कमी या तो अधिकतर परिवेश का भी प्रभाव पड़ता है, अभिभावकों का दबाव जो कि उन्हें मुख्य लक्ष्य से भटका देती है, जिसमें वह बेहतर कर सकते हैं के बदले में जीवन जीने का लक्ष्य दिया जाता है, जिससे वे बेमन से स्वीकार करते हुए जीवन यापन करते हैं।

भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में ले जाने के लिए डॉ कलाम की दृष्टि **2020** को समझना होगा किसी राष्ट्र की नींव विकास का मुख्य स्रोत वहाँ के विश्वविद्यालय/शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता युक्त शिक्षा क्या वहाँ पर अंतरराष्ट्रीय स्तर परप्रतिस्पर्धा के लायक प्रतिभा का निर्माण हो रहा है यही प्रतिस्पर्धा आगे चलकर नई तकनीक, नए सुझाव,नव निर्माण की ओर अग्रसर होगी, अगर भारत में संसाधन की कमी है तो विकसित देशों में जाकर वहाँ की तकनीक को समझकर भारत में आकर स्वयं निर्माण का प्रयास करेंगे। विकसित भारत **2047** का लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए उच्च शैक्षिक प्रशासन में सुधार करना पड़ेगा, माध्यमिक शिक्षा में लक्ष्य निर्माण को निश्चित किया जाए और स्नातक शिक्षा बालकों के भी आवश्यकता के अनुसार प्रबंध किया जाए ना कि प्रवेश परीक्षा के आधार पर कुछ बच्चों का प्रवेश लेकर अन्य को वंचित कर दिया जाए। अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए एवं शोध की गुणवत्ता का पूरा ध्यान दिया जाए।

आज भारत में शिक्षा, **डिजाइन टू फेल** की रणनीति पर कार्य कर रही है। इस रणनीति के अनुसार आंकड़ों में उच्च प्रतिभा की भीड़ इककट्ठी हो रही है। जो सिर्फ आंकड़ों में ही दिख रही है, जिसका निर्माण वे संस्थान कर रहें है जिनका उद्देश्य सिर्फ परीक्षा करवाना और परिणाम घोषित करना, और वह भी नकल के आधार पर। निजी विश्वविद्यालय एवं निजी संसाधनों में गुणवत्ता का बुरी तरह से अभाव होता है। यहाँ पर शिक्षा एक व्यवसाय है। डिजाइन टू फेल की रणनीति का दूसरा दोष भाषा का है भारत में अंग्रेजी भाषा प्रचलन में है, जबकि शिक्षा की भाषा उत्तर भारत में हिंदी ही है, लेकिन उन्हें उच्च शिक्षा अंग्रेजी में ही प्राप्त करना है। यह अनिवार्य है जोकि परीक्षा को उत्तीर्ण करने के उद्देश्य का निर्माण करता है। वास्तविक प्रतिभा का इसमें कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता। श्री अरविंद के "समग्र जीवन दृष्टि का निर्माण" ही नहीं होगा वरन शिक्षा सिर्फ डिग्री प्राप्त करने का साधन हो जाएगा।

हिंदी भाषा संदर्भ

श्री अरविन्द ने **भाषा के संदर्भ को समझने के लिए मस्तिष्क के विचार स्तर की बात करते हैं। चित्त, मनस, बुद्धि तथा अंतर्ज्ञान का क्रमिक विकास होता है,**जबकि भारतीय शिक्षा प्रणाली में इसका अभाव है।

एक छात्र अगर हिंदी भाषी है। वह हिंदी बहुत अच्छी तरह से समझ लेता है, पढ़ लेता है एवं लिख लेता है। लेकिन वह किसी विषयवस्तु को यदि अन्य भाषा में देखता है तो वह ना तो उसको समझ पाता है और ना ही कुछ लिख पाता है तो ऐसी स्थिति अविकसित प्रतिभा का निर्माण करती है। किसी समाज में ऐसी प्रतिभा है जो सिर्फ शिक्षा के माध्यम (भाषा) के कारण अपने ज्ञान का विकास नहीं कर पाता है तो उस राष्ट्र के लिए बहुत ही घातक होगा। राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में विकसित राष्ट्र में शिक्षा के माध्यम को देखा जाए तो वहाँ की शिक्षा-व्यवस्था मातृ भाषा पर आधारित है। अमेरिका में पूर्णतः अंग्रेजी भाषा बोली, लिखी एवं पढ़ी जाती हैं। रूस की अपनी भाषा रूसी है। यहाँ तक कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर दो भाषा- एक रूसी और एक **UNO** की भाषा होती है। रूसी पूरे सोवियत संघ कीभाषा थी, यह पूरे विश्व में बोली जाने वाली भाषा में सातवें नंबर पर हैं।

भारत के संदर्भ में देखा जाए तो यहाँ सिर्फ अंग्रेजी को ही एक आधार बनाया गया है उच्च शिक्षा के लिए जबकि आधारिक शिक्षा (कक्षा-**12**) तक को मातृभाषा में ही पढ़ाई जाती है और उच्च शिक्षा को पूर्णतः अंग्रेजी माध्यम में पढ़ना पड़ता है, क्योंकि शिक्षा-पुस्तकें शिक्षकों को इसी माध्यम में प्राप्त होती हैं। एक विद्यार्थी के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वह अंग्रेजी को आवश्यक विषय के रूप में पढ़ें तथा अपनी उच्च शिक्षा उसी माध्यम से प्राप्त करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव का लक्ष्य लेकर बनाई गई है। जुलाई **2020** में घोषित शिक्षा नीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष "शिक्षा की भाषा" मानी जा रही है। भारतीय भाषा को प्रोत्साहन देना केंद्र सरकार की प्राथमिकता रही है। आजादी के बाद से **2014** तक सिर्फ अंग्रेजी भाषा में ही उच्च शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता रहा है, जो कि युवाओं के साथ एक बहुत बड़ा धोखा माना जा सकता है। क्योंकि अगर युवा अपनी उच्च शिक्षा को अपनी भाषा माध्यम के कारण अच्छे तरीके से पूर्ण नहीं करते हैं तो यह एक बहुत बड़ी समस्या है, उस छात्र के लिए इसमें सुधार करने की आवश्यकता है।

विकसित भारत

भारतीय राष्ट्रवाद के पैगंबर श्री अरविंद का दर्शन **"समग्र जीवन दृष्टि"** सुपरमाइंड के सिद्धांत को यथार्थ रूप से वर्तमान में स्थापित किया जाए तो भारत एक सर्वश्रेष्ठ एवं शक्तिशाली देश बन सकता है, उसके लिए अनिवार्य है प्रतिभा का निर्माण और उच्च कौशल वीर का जन्म, जो भारत ही नहीं विश्व के शीर्ष राष्ट्रों में जाकर अपनी प्रतिभा के बल पर वहाँ की तकनीक को लेकर भारत आये और भारत के पूर्ण आत्मनिर्भर की संकल्पना को पूर्ण करें।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सन् **2020** तक भारत को एक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। अपने संकल्प को साकार करने की संभावना उन्हें भारत की युवा शक्ति में दिखाई देती है। वह इस युवा शक्ति को भारत का सबसे प्रबल संसाधन मानते हैं।

डॉ. कलाम के शब्दों में,

"हमारा विश्वास है कि प्रज्जवलित युवा मस्तिष्क प्रबल संसाधन होते हैं। धरती के ऊपर, आकाश में तथा जल के नीचे छिपे किसी भी संसाधन से यह संसाधन कहीं अधिक शक्तिशाली है। हम सबको आज का 'विकासशील' भारत एक 'विकसित' भारत में रूपांतरित करने के उद्देश्य से एक साथ मिलकर काम करना चाहिए, और इस महान उद्योग की पूर्ति के लिए आवश्यक क्रांति को हमारे मस्तिष्कों में जन्म लेना चाहिए।"

डॉ. कलाम विकसित भारत की संकल्पना विजन **2020** के लए यहाँ की युवा शक्ति को मूलाधार मानते हैं, डॉ. कलाम के शब्दों में,

"अपने राष्ट्र के लिए सर्वाधिक प्रेरक शक्ति तो हमारी यही भावना है कि 'हम यह कर सकते हैं। जब हमारे पास **25** वर्षों से कम की आयु वाले **54** करोड़ युवा हैं तो फिर भला कौन हमें सन् **2020** तक एक विकसित राष्ट्र बनने से रोक पाएगा।"

शपथः-

डॉ. कलाम ने भारत के युवा छात्रों के लिए निम्नलिखित शपथ निश्चित की है-

"जैसा कि मैं सोचता हूँ, यह शपथ हमारे देश के हर बच्चे को लेनी चाहिए। इसे ध्यानपूर्वक पढ़ो- अगर तुम इन दस चीजों में से कुछ भी कर सकते हो तो तुमने 'भारत **2020**' की दृष्टिकी शुरूआत कर दी है।

1. मैं पूर्ण समर्पण से अपनी पढ़ाई या कार्य को पूरा करूँगा और उसमें अच्छे से अच्छा करूँगा।
2. मैं कम से कम दस लोगों को पढ़ाऊँगा, जो न तो पढ़ सकते हैं और न लिख सकते हैं।
3. मैं कम से कम दस पौधे लगाऊँगा और लगातार उनकी देखभाल करके उनकी वृद्धि को सुनिश्चित करूँगा।
4. मैं शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण करूँगा और कम से कम पाँच लोगों को बुरे व्यसन एवं जुए की लत से आजाद कराने के लिए कठिन मेहनत करूंगा।
5. मैं अपने बंधु-बांधवों के दुखों को दूर करने के लिए लगातार प्रयास करूँगा।मैं किसी भी प्रकार के धार्मिक, जातिगत और भाषागत भेदभाव का समर्थन नहीं करूँगा।
6. मैं ईमानदार बनूँगा और दूसरों को अनुकरण करने के लिए स्वयं एक उदाहरण बनूँगा।
7. मैं एक जागरूक नागरिक बनने की दिशा में कार्य करूँगा और अपने परिवार का साहसी बनाउँगा।
8. मैं हर महिला का सम्मान करूँगा और नारी शिक्षा का समर्थन करूँगा।
9. मैं शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग लोगों का हमेशा मित्र या सहयोगी रहूँगा और उन्हें स्वस्थ लोगों की तरह बनाने का पूरा प्रयत्न करूँगा।
10. मैं अपने देश एवं जनता की सफलता की गर्व सहित प्रशंसा करूँगा।

भारत के युवाओं के पास अदम्य साहस होना चाहिए। इसके दो अर्थ हैं- पहला, आपको अपना लक्ष्य निर्धारित कर उस पर कार्य करना है और दूसरा, यदि ऐसा करते हुए कभी किसी समस्या से मुठभेड़ हो जाए तो उसे अपने ऊपर हावी मत होने दो। तुम उन पर हावी हो, उन्हें हटाओ तथा सफल हो। युवाजन हमारे राष्ट्र की मूल्यवान परिसंपत्तियों में से एक है। युवाओं का प्रज्जवलित मस्तिष्क पृथ्वी पर, पृथ्वी के अंदर, पृथ्वी के ऊपर सबसे प्रमुख स्रोत है।"

निष्कर्ष

भारत की वर्तमान स्थिति और विकास स्तर को देख कर कख सकते हैं कि भारत **2047** तक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आ जाएगा |श्री अरविन्द के सुपर माइंड एवं समग्र जीवन द्रष्टि की वर्तमान उपयोगिता यही हो सकती है उच्च शिक्षा में हिन्दी भाषा के माध्यम की अधिकता से उपयोग को प्रभावी बनाया जाय ग्रथा पुस्तको को हिन्दी में लिखा जाय जिससे छात्रो में चितन स्तर का विकास होगा और वे कम संसाधन अधिक गुणवत्ता वाले कार्य सम्पन्न कर सकते है **जैसे चाँद के दक्षिणी बिंदु पर सबसे पहले भारत पहुचा वह भी सबसे कम बजट में,** प्रतिभा निर्माण में गुणवत्ता युक्त शिक्षा और अनुसन्धान पर विशेष संसाधन की व्यवस्था करनी

पड़ेगी, मानक को उच्च रखना पडेगा जिससे उद्योग की स्थापना होगी जो हम आज आयात कर रहे हैं उसी को कल निर्यात करेंगे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगा |रोजगार के अवसर अधिक संख्या बढ़ेंगे जीवन स्तर उच्च हो जाएगा |

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाठक पी डी : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं आगरा विनोद पुस्तक मंदिर (2007)
2. वर्मा आर ए **:** शिक्षा अनुसंधान मेरठ आर लाल बुक डीपो **(2007)**
3. कलाम ए पी जे अब्दुल संग राजन वाई सुंदर **:** भारत **2020** नव निर्माण के रूपरेखा**,** नई दिल्ली**,** राजपाल एंड संस**(2006)**
4. कलाम ए पी जे अब्दुल संग सृजन पाल : एडवांटेज इंडिया**,** नई दिल्ली राजपाल एंड संस **(2015)** मिश्रा एल एन : शिक्षा एवं शिक्षण सिद्धांत**,** आगरा**,** अग्रपाल प्रकाशन **(2014)**
5. NEP NEP -2020 अग्रवाल,पावक संग मिश्रा लक्ष्मी
6. महर्षि अरविन्द के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों की प्रासंगकिता वर्तमान परिदृश्य **(IJTSRD) VOL-7,ISSUE-3 MAY -JUNE 2023**